10

नमक व ज्योति

(5:13-16)

जारी रखते हुए यीशु ने अपने चेलों को ''नमक'' और ''ज्योति'' बनने का आदेश दे दिया। वह चाहता था कि उनका जीवन ऐसा हो जिससे उनके आस-पास के संसार पर सबसे अधिक प्रभाव पड़े। उसने उन्हें राज्य के शुभ समाचार को इसके राजा का अनुसरण करते हुए फैलाने की चुनौती दी।

पृथ्वी के नमक (5:13)

13''**तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।**''

आयत 13. यीशु ने कहा, ''**तुम पृथ्वी के नमक हो।**'' प्राचीन लोग नमक का इस्तेमाल भोजन को स्वादिष्ट बनाने से कहीं बढ़कर करते थे (अय्यूब 6:6; कुलुस्सियों 4:6)। यीशु के सुनने वालों के पास फ्रिज या नाशवान भोजनों को रखने के अन्य आधुनिक ढंग नहीं थे, इस कारण नमक का इस्तेमाल चीज़ों को खराब होने से बचाने के लिए किया जाता था। उदाहरण के लिए गलील की झील में से मछलियां पकड़ने के बाद आम तौर पर उन्हें नमक लगाकर बेचने के लिए अन्य स्थानों पर भेजा जाता था। नमक का इस्तेमाल कई चिकित्सकीय उद्देश्यों के लिए भी किया जाता था। एल्डर प्लाइनी ने कहा कि नमक दवाई में शुद्धिकरण के लिए लगाया जाता था। इसका इस्तेमाल सांप के काटने और ततैया के डंक के उपचार के सम्बन्ध में किया जाता था। यह आंख के उपचार में काम आता था और इसका इस्तेमाल चोट को ढकने के लिए किया जाता था। नमक दांत खराब होने से बचाने और पेट से कीड़े निकालने के लिए उपयोगी था।[1]

यूनानी लोगों का मानना था कि नमक में कोई ईश्वरीय गुण है। रोमी लोग आम तौर पर अपने सिपाहियों का वेतन इससे देते थे। वास्तव में इससे यह बात प्रसिद्ध हो गई कि ''उसने नमक की कीमत चुकाई है।'' नमक को ''मानवीय जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं में से एक माना जाता था।''[2] नमक के लाभों की प्रशंसा करने के बाद, प्लायनी ने लिखा, ''इसमें यह कहावत विशेष रूप से लागू होती है कि पूरे तन के लिए नमक और सूर्य से बढ़कर उपयोगी और कुछ नहीं है।''[3] बहुत अधिक नमक हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकर हो सकता है पर इसकी निश्चित मात्रा हमारे शरीर के तरलों में सन्तुलन बनाए रखने के लिए उपयोगी है।

यीशु ने अपने चेलों को संसार में शक्तिशाली प्रभाव बनने की प्रेरणा देने के लिए इसके स्वाद, चीज़ों को सम्भालने और चंगाई की शक्तियों के साथ नमक के रूपक का इस्तेमाल किया।

लियोन मौरिस ने लिखा है:

> स्पष्टतया यीशु नमक के काम को सड़न के शत्रु के रूप में, चीज़ों को सम्भालने के रूप में और भोजन को स्वादिष्ट बनाने के काम पर विचार कर रहा है। समाज में जो अच्छा है उसके चेले उसको पूरा करते हैं। जो खराब है वे उसका विरोध करते हैं; वे भलाई के लिए समाज में घुस जाते हैं और एक नैतिक ऐंटिसेप्टिक यानी रोगाणुनाशक दवा के रूप में काम करते हैं और वे भोजन में नमक की तरह जीवन में स्वाद देते हैं।[4]

नमक का इस्तेमाल प्राचीनकाल में खाद के रूप में भी किया जाता था (लूका 14:34, 35)। खेत में बहुत अधिक नमक डालना इसे बर्बाद कर देगा (व्यवस्थाविवरण 29:23; न्यायियों 9:45), परन्तु थोड़ी थोड़ी मात्रा से अच्छी फसल देने में सहयोग करके यह बीज को बढ़ाता है। इसी प्रकार से यीशु के चेलों का शुद्ध प्रभाव राज्य के शुभ समाचार (बीज) को पूरी तरह से प्रभावी होने में सहायता करके, खाद या उर्वरक का काम करता है।

यीशु ने आगे कहा, **''परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा?''** नमक का रासायनिक नाम सोडियम क्लोराइड है, और इस कारण इसमें से खारेपन को निकाला नहीं जा सकता। परन्तु यीशु के समय में अधिकतर नमक समुद्र के खारे पानी में से भाप उड़ा कर ही तैयार किया जाता था। मृत सागर के नमक में, नमक के अलावा कई अन्य रसायन और खनिज होते थे। नमक निकालने वाले लोग समुद्र के पानी से जितना अच्छा अच्छा नमक निकाल पाते वे निकाल लेते और बाद में इस्तेमाल के लिए इसे इकट्ठा कर लेते थे। यदि बारिश हो जाती तो नमक बह जाता और केवल बेकार सामग्री यानी ठोस रह जाता। यह किसी काम का न होता सिवाय इसके कि इसे **फैंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।** इसी प्रतीक के द्वारा जब एक मसीही व्यक्ति बचाने वाले अपने प्रभाव खो देता है तो वह मसीह के काम के लिए बेकार हो जाता है।

जगत की ज्योति (5:14-16)

[14]''तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। [15]और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। [16]उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।''

आयत 14. यीशु ने आगे कहा, **''तुम जगत की ज्योति हो।''** वचन में ''ज्योति'' को आमतौर पर सच्चाई, शुद्धता और धार्मिकता का प्रतीक बताया गया है। इसके विपरीत ''अंधकार'' अज्ञानता और बुराई का प्रतीक है (भजन संहिता 119:105; यूहन्ना 1:4-9; 3:19-21; 2 पतरस 1:19; 1 यूहन्ना 1:5-7)। पुराने नियम के युग में परमेश्वर ने इस्राएलियों से अन्यजाति देशों के लिए ज्योति बनने को कहा था (यशायाह 42:6; 49:6), पर वे आम तौर पर इस उद्देश्य में नाकाम रहते थे। सेवक की भूमिका जिसे यीशु ने चुना अब वह उसके अनुयायियों को आगे दी गई।[5] वह ''जगत की ज्योति'' था (यूहन्ना 8:12; 9:5), और उसने कहा कि उसके अनुयायी

भी ''जगत की ज्योति'' हैं (देखें फिलिप्पियों 2:15)। अन्य शब्दों में उसके सेवकों को उस ज्योति को चमकाना है, जो उन्होंने उससे पाई है (इफिसियों 5:6-14)। संसार को उस आत्मिक अंधकार में से निकलने के लिए जिसमें वह फंसा हुआ है अगुआई के लिए सच्चाई की ज्योति चाहिए।

यीशु ने ज्योति के अपने रूपक को यह कहते हुए समझाया, ''**जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता।**'' सम्भव होने पर नगर कई कारणों से पहाड़ के पास बनाए जाते थे। ऐसी स्थिति की अपनी व्यावहारिकता है। इससे उनके आस-पास के मैदानी इलाकों को जानवरों के पालने और फसल उगाने के लिए सुरक्षित रखा जा सकता था। इस स्थिति का सम्बन्ध मौसम से भी था। गर्मियों, उमस भरी रातों में ऊंचे स्थानों पर रहने वालों को सूखे खेतों में से समुद्री हवा के चलने पर ठण्डक मिलती थी। पहाड़ी का सैनिक लाभ भी था। ऊंचाई से शत्रु के हमलों से रक्षा के लिए प्राकृतिक चौकसी मिल जाती थी। इसके अलावा पहाड़ियों पर बसे हुए नगर थके हुए यात्रियों के लिए रात में रौशनी के संकेत थे, क्योंकि वे मीलों दूर से दिखाई दे सकते थे।

जब यीशु ने ये बात कही तो उस समय उसके इर्द-गिर्द ''पहाड़ी'' या ''पहाड़'' पर काफ़ी भीड़ थी (5:1)। चेलों की यह बड़ी संख्या ''जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है'' उसके जैसी होनी थी। आज भी गलील की झील पर जाने वाले लोग पहाड़ियों के आस पास बसे कितने नगरों के रात को झील के तट पर अपनी रोशनी देने से प्रभावित होंगे।

आयत 15. यीशु ने पूरे नगर की ज्योति के अपने बड़े उदाहरण के बाद एक अकेले घर की ज्योति की बात की। उसने कहा कि ऐसा बहुत कम होगा कि कोई **दीया जलाकर** उसे **पैमाने या टोकरी** के नीचे रख दे (देखें लूका 8:16; 11:33; मरकुस 4:21)। पहली सदी के लोग अपने घरों में रौशनी के लिए तेल के छोटे दीयों का इस्तेमाल करते थे। दीए के ऊपर पैमाने को रखने से इसका उद्देश्य खत्म हो जाना था और इसकी लौ बुझ जानी थी जो उसके खत्म होने का संकेत था (अय्यूब 18:5, 6; 21:17; नीतिवचन 13:9; 20:20; 24:20; 31:10, 18)। इसके बजाय व्यक्ति दीये को **दीवट** पर ही रखता जो दीवार से बाहर निकला हुआ एक पत्थर या बीच के बीम पर लगी लकड़ी के शैल को बोलते हैं। इससे दीया **घर के सब लोगों को प्रकाश** देता [था]। यह दीया छोटा ही होता होगा जिससे थोड़ी सी रौशनी मिलती थी परन्तु इसे दीवट के ऊपर रखने से अधिक से अधिक प्रकाश मिल सकता था। यहूदी घरों में आम तौर पर एक कमरे वाले छोटे-छोटे ढांचे होते थे, जिस कारण ऐसे ऊंचाई पर रखे दीये से घर के हर व्यक्ति को प्रकाश मिल सकता था।[6]

आयत 16. यह नियम बताने (5:14क) और उस नियम के दो उदाहरण देने के बाद (5:14ख, 15), यीशु ने इस सच्चाई को अपने चेलों के ऊपर लागू किया। उसने कहा, ''**उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।**'' मसीह के अनुयायियों को लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचना नहीं बल्कि उन्हें अपने आस पास के संसार में मसीह को आकर्षित बनाना आवश्यक है। ''भले'' के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल उसके विवरण के लिए किया जाता है जो ''सुन्दर,'' ''उपयोगी'' और ''प्रसंशनीय'' हो। ''बड़ाई'' के लिए शब्द का अर्थ ''गुणगान,''

''प्रशंसा'' या ''स्तुति'' करना है। यह वही शब्द है जिससे अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ''doxology'' (स्तुतिगान) लिया गया है। मसीही व्यक्ति के भले काम दूसरों का ध्यान परमेश्वर और उसके पुत्र की ओर दिलाने के लिए, जो कुल मिलाकर प्रभु को दी जाने वाली प्रशंसा है (देखें इफिसियों 2:10; 1 पतरस 2:12)। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने इस प्रकार व्याख्या की, ''जिस प्रकार प्रकाश संसार में से अन्धकार को छितरा देता है, और लोगों को देखने के योग्य बनाता है कि कैसे चलना और परिश्रम करना है, उसी प्रकार से चेले, अपने भले कामों, अपनी शिक्षा और अपने नमूने के द्वारा, अज्ञानता और पूर्व धारणा को छितराकर लोगों को अनन्त जीवन के मार्ग को देखने के योग्य बनाते हैं।''[7]

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

नमक (5:13)

आम तौर पर मसीही लोगों पर आरोप लगाया जाता है कि हम ''दूसरे संसार के इतने अधिक हैं कि पृथ्वी के किसी काम के नहीं।'' ये हो सकता है कि हमारे सिर बादलों में इतनी ऊंचाई पर हों कि हम अपने पैरों के नीचे की ज़मीन को न देख पाएं? क्या हम संसार में रहते हैं, या हम स्वर्ग के राज्य के लोगों के रूप में रहते हैं? यह या तो/या वाली स्थिति नहीं है।

क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले की गई अपनी प्रार्थना में यीशु ने कहा था कि उसके चेले ''संसार में'' थे पर ''संसार के नहीं'' (यूहन्ना 17:11, 16)। जब एक मसीही व्यक्ति मसीह की सेवा के उद्देश्य से संसार में हो तो यह अच्छी बात है। जब संसार मसीही व्यक्ति में हो, तो यह अच्छी बात नहीं है (याकूब 4:4; 1 यूहन्ना 2:15-17)। यीशु ने यह प्रार्थना नहीं की कि उसके चेलों को संसार में से निकाल दिया जाए, बल्कि यह कि उन्हें संसार में परमेश्वर के उद्देश्य की सेवा करते हुए शैतान से सुरक्षा दी जाए (यूहन्ना 17:15, 18)। जैसा कि इस शिक्षा में बताया गया है, वह उद्देश्य संसार को अपनी भलाई के साथ स्वादिष्ट करना है।

मसीही लोगों के रूप में हमें अपने आस-पास के सब लोगों के पास मसीह का स्वाद देने के लिए नमक डालने वाले लोग होने चाहिए। हमें बिना आत्मिक ऊर्जा के ठण्डे, नीरस और बेजान नहीं होना चाहिए। हमें साथ मिल जाने वाले नहीं बल्कि डटे रहने वाले होना चाहिए। हमें केवल अलग ही नहीं, बल्कि अलग करने वाले भी होना चाहिए। यीशु हमें नमक बनने को कहता है न कि चीनी बनने को। नमक हमें चिढ़ा सकता है पर यह सम्भाल भी सकता है। यदि हमारा ''नमकीनपन खो'' जाए तो हम मसीह के काम के लिए किसी काम के नहीं है।

ज्योति (5:14-16)

परमेश्वर के ''आकाश और पृथ्वी'' की सृष्टि करने के बाद ''पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी,'' तो परमेश्वर ने उजियाला बनाया, जो हर प्रकार के जीवित प्राणियों के लिए आवश्यक है (उत्पत्ति 1:1-3)। ज्योति का उद्धार के साथ पुराना नाता रहा है। हम अगुआई और आशा के प्रतीक के रूप में अपनी खिड़कियों में रोशनी लगाते हैं। लाईट हाउस आज भी जहाज़ों को तूफ़ानों और खतरनाक रुकावटों से बचने के लिए चेतावनी देने का काम करते हैं। मसीही लोगों

के लिए दूसरों को सत्य की ज्योति में अगुआई के लिए संसार में ज्योतियां बनना आवश्यक है। यदि हमारी रोशनी जाती रहे, या हम उसे छिपा लें, तो बहुत से लोग इस संसार के अन्धकार में टटोलते फिरेंगे और खो जाएंगे। यीशु ने कहा कि मसीही लोग ''जगत की ज्योति'' हैं, पर मण्डलियां भी उसी प्रकार से हर समुदाय में जहां वे हैं, ज्योति हैं। मत्ती 5:14-16 में लोगों के लिए कही गई बात मण्डलियों पर भी लागू होती है।

जगत की ज्योति (5:14-16)

हमारा संसार आत्मिक अन्धकार में डूबा हुआ है। परन्तु प्रकाश अन्धकार को छितरा देता है। कभी कोई व्यक्ति ज्योति को अन्धकार से खत्म नहीं कर पाया है। जब रौशनी आती है, तो अन्धकार भाग जाता है। मसीही लोगों के रूप में हमें सत्य की ज्योति में लोगों की अगुआई के लिए अपनी ज्योतियों को चमकाना आवश्यक है। इसका अर्थ गले में क्रूस पहनने से कहीं बढ़कर है। इसके लिए हमारे जीवन इस प्रकार के होने आवश्यक हैं जिससे दूसरे लोग हमारे अन्दर मसीह को रहते हुए देख सकें (यूहन्ना 13:35; 15:8; 2 कुरिन्थियों 8:21; फिलिप्पियों 2:14-16; तीतुस 2:7, 8; 1 पतरस 2:12)। मैकार्थर ने लिखा है, ''हम दूसरों को ठोकर के भय के कारण, उदासीनता और प्रेम न होने के कारण, चाहे किसी भी अन्य कारण से अपनी ज्योति को छिपा लें, पर हम प्रभु के प्रति अविश्वास को दिखाते हैं।''[8]

टिप्पणियां

[1]प्लायनी *नेचुरल हिस्ट्री* 31.45. [2]प्रवक्ता ग्रंथ 39:26 (NRSV)। [3]प्लायनी *नेचुरल हिस्ट्री* 31.45. [4]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 104. [5]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 42. [6]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बिब्लिकल बैंक्ग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन, 2002), 36 में माइकल जे. विलकिंस, ''मैथ्यू।'' [7]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एण्ड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, ऑरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 51. [8]मैकऑथर, 246.